रथयात्रा के 27 साल: नायक इतिहास के अंधेरे में, सारथी प्रधान मंत्री बन गया

पच्चीस सितम्बर, भाजपा के दिग्गज नेता दीन दयाल उपाध्याय की जयंती, इसी दिन लालकृष्ण आडवाणी ने ठीक 27 साल पहले यानी 25 सितम्बर को अपनी वो ऐतिहासिक रथ यात्रा गुजरात से ही शुरू की थी, जिसने आगामी सालों में भारतीय राजनीति की दिशा और दशा दोनों बदल ली। आज राहुल गांधी की हसरतें भी वही हैं, तभी शायद उसी ऐतिहासिक दिन उन्होंने ये रथ यात्रा शुरू की है, जिस दिन आडवाणी ने शुरू की थी।

दिलचस्प बात है कि आडवाणी ने भी गुजरात के ही एक प्रसिद्ध मंदिर से वो रथयात्रा शुरू की थी और राहुल गांधी ने भी एक प्रसिद्ध मंदिर से ही की है। आडवाणी की रथ यात्रा सोमनाथ मंदिर से शुरू हुई थी, तो राहुल गांधी ने द्वारका का द्वारकाधीश मंदिर से की है। ऐसे में ये सवाल उठना लाजिमी है कि ये तारीख क्या राहुल या उसके सलाहकारों ने जानबूझकर चुनी।

हालांकि आडवाणी ने केन्द्र में सरकार बनाने का लक्ष्य लेकर अयोध्या को अपनी रथ यात्रा का आखिरी मुकाम बनाया था, तो राहुल की नजर फौरी तौर पर गुजरात पर ही है और राहुल की ये नवसृजन यात्रा तीन दिन में गुजरात में ही खत्म हो जाएगी। आडवाणी की रथ यात्रा की सालगिरह तो अब बीजेपी भी नहीं मनाती, कई सालों तक आडवाणी उसी तारीख की सालगिरह को याद दिलाने के लिए सोमनाथ मंदिर जाते रहे। फिर उन्होंने भी जाना छोड़ दिया। यानी देश को चिंता है और ना पार्टी को और ना अब खुद आडवाणी को।

इतिहास की अपनी विडम्बना है, कभी भी इतिहास का कोई भी महानायक कूड़ेदान में डाला जा सकता है, किसी भी घटना को जो कभी टर्निंग प्वॉइंट मानी जाती रही है, को बहुत मामूली बनाया जा सकता है। एक पल ऐसा होता है, जब वो घटना इतनी बड़ी लगती है कि भविष्य की नींव इसी पर रखी जा रही है, लेकिन एक दिन जब भविष्य ही उसे अपनी नींव मानने से मना कर रहा होता है। आडवानी की रथ यात्रा के मामले में भी ऐसा ही कुछ हुआ है।

25 सितम्बर 2015 को लाल कृष्ण आडवाणी की पहली रथ यात्रा को शुरू हुए पूरे पच्चीस साल हुए तो लगा था कि बीजेपी भले ही हर साल ना मनाए, लेकिन रथ यात्रा के 25वें साल को तो बड़े आयोजन के तौर पर मनाएगी। लेकिन ऐसा होना तो दूर किसी का बयान तक नहीं आया कि 25 साल हो गए हैं। आलम ये था कि रथ यात्रा का सारथी आज देश का प्रधानमंत्री है, और पीएम का उसी दिन यानी 25 सितम्बर 2015 को संयुक्त राष्ट्र संघ में ना केवल भाषण था, बल्कि यूएन के चीफ बान की मून से लम्बी मुलाकात भी की।

दूसरी तरफ उसी रथ यात्रा का नायक इस इंतजार में घर में बैठा रहा कि उसकी पार्टी भले ही इस बड़े और खास दिन पर कोई आयोजन ना करे, पार्टी चीफ या पीएम मिलकर उन दिनों की याद तो ताजा

करेंगे ही। अब भी पूरी पार्टी देश भर में दीन दयाल उपाध्याय की 100वीं जयंती मनाने में मशगूल है।

आडवाणी की सोमनाथ से लेकर अयोध्या तक की यात्रा के कई ऐतिहासिक मायने हैं, इतिहास को बदला नहीं जा सकता। सबसे बड़ा तो यही तथ्य है कि मोदी का राष्ट्रीय पटल पर अवतरण इसी रथ यात्रा के जरिए हुआ। किताब 'नरेन्द्र मोदी : एक शख्सियत, एक धरोहर' के पेज नं। 131 पर मोदी ने लेखक को बताया है कि, 'इस अनुभव से मुझे मेरी प्रबंधन क्षमता को विकसित करने का अवसर मिला'।

13 सितंबर 1990 को मोदी ने गुजरात इकाई के महासचिव (प्रबंधन) के रूप में रथ यात्रा के औपचारिक कार्यक्रमों और यात्रा के मार्ग के बारे में मीडिया को बताया। इस तरह मोदी पहली बार राजनीति के राष्ट्रीय मंच पर महत्वपूर्ण भूमिका में सामने आए थे। इस तरह पहली बार मोदी मीडिया रंगमंच के लिए प्रमुख पात्र बन गए थे, इतने बड़े कार्यक्रम की सबसे ज्यादा सूचनाएं अगर किसी के पास थीं तो वो थे नरेन्द्र मोदी। कुछ जानकारियां तो आडवाणी को भी बाद में मिलती थीं।

यही वो वक्त था जब मोदी ने एक तीर से कई निशाने साधे, चूंकि नेशनल मीडिया से बातें करने के लिए वो अधिकृत थे, तो वीपी सिंह से लेकर यूपी सरकार तक उन्होंने सबको चुनौती दे डाली कि कोई रोक कर दिखाए, पहली बार मोदी का स्वरूप राष्ट्रीय होने लगा था, रथयात्रा ने उनके लिए दिल्ली का रास्ता खोलने का काम कर दिया था। इधर इस मौके पर मीडिया को दिए गए तमाम वक्तव्यों के दौरान उन्होंने राम मंदिर को लेकर भी इसे सांस्कृतिक चेतना और धरोहर बताया और उसके लिए संघर्ष की बात कही, जो भविष्य की उनकी योजनाओं को दर्शाता था।

हालांकि मीडिया से मुलाकातों के दौरान मोदी से रथयात्रा के चलते सम्भावित दंगों की आशंकाओं के बारे में भी सवाल पूछे गए, मोदी ने उसे ये कहकर टाल दिया कि इस तरह की बातें तो गुजरात की आदत में हैं। मोदी ने ये तक ऐलान कर दिया कि बीजेपी 30 अक्टूबर को अयोध्या में एक और जलियां वाला बाग के लिए तैयार है।

दरअसल तय योजना के मुताबिक 25 सितम्बर को सोमनाथ से शुरू होकर यात्रा 30 अक्टूबर को अयोध्या में खत्म होनी थी। रथयात्रा की कामयाबी को देखते हुए मोदी को प्रबंधन का मास्टर का खिताब मिल गया और उन्हें बीजेपी की अगली यात्रा यानी मुरली मनोहर जोशी की कन्या कुमारी से कश्मीर तक की एकता यात्रा का भी सारथी बना दिया गया।

केवल मोदी ही नहीं एक और गुजराती भी इस यात्रा के जरिए चर्चा में आया। इसी दौरान मोदी के पुराने सहयोगी प्रचारक और कैंसर सर्जन प्रवीण तोगड़िया ने भी राष्ट्रीय पटल पर अंगड़ाई ली, और मौके को भुनाया। उन्होंने भी विश्व हिंदू परिषद के कई कार्यक्रमों का ऐलान कर दिया, उन्होंने 101 राम ज्योति यात्रा और 15,000 विजय दशमी यात्राओं का ऐलान कर दिया, वो उन दिनों विहिप की गुजरात इकाई के महासचिव थे।

हालांकि इस यात्रा की जड़ें कुछ साल पहले रखी गईं थीं। अक्टूबर 1984 में वीएचपी ने अयोध्या में मंदिर के लिए रामजन्म भूमि मुक्ति यज्ञ समिति का गठन किया। 8 अक्टूबर 1984 को अयोध्या से लखनऊ की 130 किलोमीटर की यात्रा से आंदोलन शुरू हुआ। 1986 में वीएचपी ने मंदिर आंदोलन को

बड़े पैमाने पर शुरू कर दिया। 1989 में वीएचपी ने विवादित स्थल के नजदीक ही राम मंदिर की नींव रख दी। 1989 में वीएचपी के आंदोलन को तब बड़ा मंच मिला जब बीजेपी उसके साथ खड़ी हो गई।

जून 1989 में बीजेपी ने पालमपुर प्रस्ताव में मंदिर आंदोलन के पक्ष में खड़े होने का फैसला किया। बीजेपी के कूदने के बावजूद तब तक वीएचपी ही आंदोलन की अगुवा थी। 1989 के आम चुनाव से ठीक पहले राजीव गांधी सरकार ने वीएचपी को मंदिर के लिए अयोध्या में 9 नवंबर को शिलान्यास की इजाजत दे दी।

इसे वीएचपी की बड़ी सफलता माना गया लेकिन माहौल ऐसा बन गया था कि इस दौर में देश ने सांप्रदायिक दंगों का सबसे भयंकर दौर देखा। 22 से 24 नवंबर 1989 को आम चुनाव से पहले हिंदी प्रदेशों में दंगों में करीब 800 लोगों की जान चली गई। बीजेपी को 88 सीटें मिलीं जिसके समर्थन से वीपी सिंह प्रधानमंत्री बने। अब धीरे-धीरे आंदोलन की कमान बीजेपी के हाथ आने लगी थी।

रथ यात्रा को शुरू करने के पीछे तमाम वजहें मानी जाती हैं, माना ये भी गया चूंकि वीपी सिंह ने मंडल आयोग की सिफारिशें लागू करने का फैसला किया तो बीजेपी को जाति के आधार पर हिंदू वोट बैंक के बंटने का डर था, जिससे उसे एक करने के लिए कोई नया मुद्दा उठाना बहुत जरूरी था, वैसे भी वो आरक्षण का विरोध करने की हालत में नहीं थी। ऐसे में आडवानी का ये दांव ना होता तो शायद बीजेपी का कमंडल मंडल के फेर में टूट जाता। इसलिए मंडल के दाव से कमंडल को बचाने वाली थी आडवाणी की रथ यात्रा। बीजेपी को 2 अंकों से तीन अंकों में पहुंचाने वाली थी रथयात्रा।

यूपी में कांग्रेस को बर्बाद करने वाली भी आडवाणी की रथ यात्रा ही थी। उसके पीछे भी दिलचस्प वजह है, मुलायम की सरकार यूपी में भाजपा के सहारे चल रही थी, जैसे केन्द्र में वीपी सिंह की सरकार चल रही थी। जैसे ही आडवाणी की गिरफ्तारी हुई, उसके सात दिन बाद अयोध्या में यात्रा खत्म होनी थी, हजारों स्वयंसेवक और रामभक्त वहां पहुंच चुके थे।

मुलायम ने उन पर गोलियां चलवा दीं। ढेर सारे लोग मारे गए, बीजेपी ने सपोर्ट वापस लिया तो कांग्रेस ने मुलायम को सहारा दे दिया। सरकार तो बच गई लेकिन कांग्रेस की यही भूल सबसे बड़ी भूल साबित हुई। तब से आज तक यूपी में कांग्रेस चौथे स्थान से ऊपर नहीं उठ पाई है। मुलायम लगातार कांग्रेस के वोट बैंक को काट काट कर मजबूत होते गए।

झटका वीपी सिंह सरकार को भी लगा, आडवाणी को जब गिरफ्तार किया गया। तो वर्तमान में बीजेपी की केन्द्र सरकार में मंत्री और पूर्व गृह सचिव आर के सिंह जो उन दिनों कॉपरेटिव रजिस्ट्रार थे को आईजी पुलिस के साथ समस्तीपुर के सर्किट हाउस में भेजा गया। ये भी दिलचस्प बात है कि उसी गिरफ्तारी से आरके सिंह चर्चा में आए और कैरियर की ऊंचाइयां चढ़ते हुए गृह सचिव बन गए और अब उसी रथ यात्रा के सारथी मोदी की सरकार में मंत्री भी हैं।

उस दिन आडवाणी ने गिरफ्तारी से पहले तैयारी के लिए थोड़ा समय मांगा और फौरन एक पत्र राष्ट्रपति के नाम वहीं लिखा और कैलाशपति मिश्रा को सौंप दिया। आडवाणी की रिक्वेस्ट पर प्रमोद महाजन को उनके साथ जाने की इजाजत मिली और हैलीकॉप्टर से दोनों को दुमका लाया गया, वहां से

बिहार-पश्चिम बंगाल के बॉर्डर मसंजौर के रेस्ट हाउस में लाया गया, जो आजकल झारखंड में है। बाद में बीजेपी ने वीपी सिंह की सरकार से समर्थन वापस लिया और सरकार गिर गई।

अगर वीपी सिंह की सरकार ना गिरती तो शायद चंद्रशेखर को भी पीएम बनने का मौका ना मिलता। तो रथ यात्रा ना होती तो राजनीति के राष्ट्रीय पटल पर शायद मोदी, चंद्रशेखर, मुलायम सिंह, आर के सिंह, तोगड़िया, प्रमोद महाजन जैसे लोगों को ऐसे मौके ना मिलते और ना भारतीय पुरातन परम्पराओं में वर्णित यान यानी रथ वापस चलन में आता। बाद में कई नेताओं ने इसे आजमाया। अकेले आडवानी ने ही 6 रथयात्राएं निकालीं, कभी जनचेतना यात्रा तो कभी जन सुरक्षा यात्रा।

वो रथयात्रा ही थी, जिसके चलते गुजरात का एक मामूली संत आसाराम एक नेशनल संत बनकर देश में मशहूर हुआ। कई पत्रकारों ने रथ यात्रा के लिए भीड़ जुटाने में आसाराम बापू की भूमिका के बारे में भी लिखा है। नब्बे के दशक में आडवाणी की रथ यात्रा में आसाराम बापू ने अहम भूमिका निभाई। रथ यात्रा के लिये बापू ने जनाधार जुटाने में बड़ी भूमिका निभाई।

उस जनाधार को देखते हुए पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने बापू की जमकर तारीफें कीं। धीरे धीरे वो बीजेपी नेताओं के करीब आने लगे, बीजेपी नेताओं के भक्त और उनके कार्यकर्ताओं के बीच बापू की चर्चा होने लगी, जिसके चलते बापू का साम्राज्य फैलने लगा, ये भी इतिहास की विडम्बना है आज आसाराम बापू जेल में हैं।

आडवाणी अपनी आधिकारिक वेबसाइट और ब्लॉग में कई बार रथयात्रा की शुरूआत के लिए सोमनाथ को और अंतिम पड़ाव को अयोध्या चुनने की वजह के बारे में लिख चुके हैं। आडवाणी की रथ यात्रा की अभूतपूर्व कामयाबी ने संघ परिवार और भाजपा को नया रास्ता दिखा दिया।

उसके फौरन बाद मुरली मनोहर जोशी ने कन्या कुमारी से लेकर श्रीनगर तक एकता यात्रा का ऐलान कर दिया, और कन्या कुमारी से शुरू करके 26 जनवरी को श्रीनगर के लाल चौक में तिरंगा फहरा भी दिया, साहसिक यात्रा होने के बावजूद इसको सामान्य राजनैतिक इतिहार में उतनी तबज्जो नहीं मिली, फिर भी संघ से जुड़े संगठन अपने कार्यक्रमों और उपलब्धियों में इसे गिनते आए हैं।

रथयात्रा के बाद आम चुनावों में गुजरात में भाजपा ने 26 में से 20 सीटें जीतीं, विधानसभा चुनावों में भी भाजपा ने 119 विधानसभा सीटों पर बढ़त हासिल की, ये नतीजे तो तब प्राप्त किए जब राजीव गांधी की हत्या के बाद देश में सुहानुभूति की लहर चल रही थी। आडवाणी इस यात्रा के बाद हर साल 25 सितम्बर को सोमनाथ जाते रहे और वहां से किसी ना किसी बड़ी बात का हर साल ऐलान भी होता रहा।

आडवाणी इस यात्रा के बाद पार्टी और संघ के निर्विवाद नेता बन चुके थे, अब उनसे उम्र में छोटे संघ प्रचारक आसानी से उनकी बातों को काटने की हिम्मत नहीं कर पाते थे। उसका एक दूसरा पहलू भी सामने आया, शालीन और अनुशासित आडवाणी के आसपास एक चौकड़ी जमने लगी थी। जिसके चलते ही मीडिया और उनके अपने संघ परिवार में काफी कुछ लिखा कहा गया।

लेकिन वो दौर आडवाणी का था, आज लालू लाख कहें कि उन्होंने आडवाणी का रथ रोका लेकिन हकीकत ये थी कि सीधे वीपी सिंह तक इसमें शामिल थे, एयरफोर्स और पैरा मिलिट्री फोर्स के 2000 जवानों को गिरफ्तारी के लिए तैनात किया गया था। दरभंगा जिले के डीएम और एसएसपी ने तो लालू के मौखिक ऑर्डर को मानने से इनकार कर दिया था, कहा था लिखित ऑर्डर भेजिए। बवाल के डर से लालू पांच दिन पहले यानी 18 अक्टूबर को दिल्ली में ही आडवाणी से मिलने आए थे कि बिहार मत जाइए।

पहले तो पटना में ना घुसने देने की ही प्लानिंग की थी, लेकिन नहीं रोक पाए। फिर जब पटना के गांधी मैदान में आडवाणी ने पीएम वीपी सिंह की आठ अक्टूबर की रैली से भी ज्यादा भीड़ जुटा दी, तो वीपी सिंह और लालू दोनों की पेशानी पर बल पड़ गए। ये वही मैदान था, जिसमें जेपी ने सम्पूर्ण क्रांति का नारा दिया था, मोदी की रैली से पहले बम धमाके हुए थे और इतिहास का तारतम्य देखिए लालू ने आडवाणी को उस जिले में गिरफ्तार किया था, जो उनके नेता कर्पूरी ठाकुर की कर्मभूमि थी यानी समस्तीपुर।

और आज जब बीजेपी ने इस दिन दीनदयाल उपाध्याय जी जयंती पर कई तरह के कार्य़क्रम आयोजित किए हैं, सभी राष्ट्रीय और क्षेत्रीय नेता दिल्ली में इकट्ठे हैं, देश भर में अगले पखवाड़े के कई कार्य़क्रमों का ऐलान हुआ है, किसी को सुध नहीं है कि आडवाणी जी की रथ यात्रा की सालगिरह का ही याद कर लिया जाए। मीडिया वालों को भी याद ना आता अगर उसी 25 सितम्बर को राहुल गांधी, उसी गुजरात में अपनी रथ यात्रा ना शुरू करते।।भाजपा के दिग्गज भूल गए हों लेकिन शायद कांग्रेस के दिग्गजों को ये तारीख याद रही।
(साभार: inkhabar.com से)